झलक

अंक 14

प्रगत संगणन विकास केंद्र(सी-डैक)
(इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत
का एक स्वायत्त वैज्ञानिक संस्था)
वेल्लयंबलम, तिरुवनंतपुरम-695033

संसदीय राजभाषा समिति के दूसरी उप समिति द्वारा तारीख 09.01.2025 को सी डैक, तिरुवनंतपुरम में किए राजभाषा निरीक्षण से

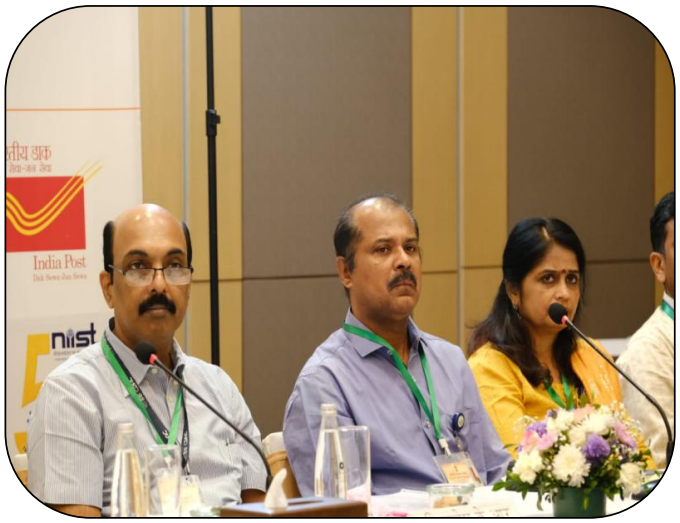

झलक
अंक 14

संपादक मंडल
संरक्षक

डॉ.कलै सेलवन ए
निदेशक

संपादक
श्री जगदीश कुमार आर एस
सह निदेशक एवं विभाग प्रधान(मानव संसाधन)

संपादन सहयोग
श्री कृष्णकुमार रावु.ए, वैज्ञानिक 'जी'
श्रीमती राजश्री.एस, वैज्ञानिक 'जी'
श्री संतेष.एस, वैज्ञानिक 'ई'
श्री परमेश्वरन नंबूतिरी.वी, वैज्ञानिक 'ई'
श्री मनवेरा शरत रेड्डी,वित्त अधिकारी
श्री राकेश.एम, वैज्ञानिक 'ई'
श्री श्रीनिवास नाइक गुगुलोत, वैज्ञानिक 'ई'
श्रीमती जयश्री. के, प्रबंधक(प्रशासन)
श्री जेजी मात्यु, परामर्शदाता(रा.भा.)

आवरण पृष्ठ
श्री अजी.आर, परियोजना तकनीशियन

रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के मात्र है। यह आवश्यक नहीं कि इसमें कार्यालय से कोई संबंध हो।

प्रगत संगणन विकास केन्द्र(सी डैक)
वेल्लयंबलम
तिरुवनंतपुरम 695033

इस अंक में

क्रम सं.	इस अंक में	पृष्ठ सं.
1	गृह मंत्री का संदेश	5
2	निदेशक का संदेश	7
3	मुख्य संपादक की ओर से	9
4	जलवायु अनुकूल कृषि के लिए विकसित सटीक खेती परिस्थिति प्रणाली	12
5	धड़कन	14
6	मिसाईल वुमन-टेसी तोमस	16
7	ग्रामीण समाधान अनुसंधान	18
8	विचारण	25
9	कार्यस्थल में जेनरेशन ज़ेड: विद्रोही,यथार्थवादी और पुनर्परिभाषकें	26
10	क्वाटंम आधारित अनुकूली यातायात अनुकूलन नियंत्रण प्रणाली	28
11	सर्वश्रेष्ठ निष्पादन पुरस्कार-2025	30
12	प्रत्येक महीने के विशेष दिनों के बारे में जानिए	32
13	वार्षिक कार्यक्रम 2025-2026	34
14	राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए किए जा रहे कार्य	35

कार्यालय के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तारीख 28.07.2025 को आयोजित वैठक

हिन्दी दिवस के अवसर पर माननीय गृह मंत्री का संदेश

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहरी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2024

(अमित शाह)

संदेश

समय अबाध गति से चलता रहता है और समय के साथ स्थितियां एवं परिस्थितियां भी बदल जाती है। वर्तमान समय चुनौतियों से परिपूर्ण है। वैश्वीकरण और कंप्यूटरीकरण के इस समय में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन को बढ़ावा देना अधिक चुनौतीपूर्ण है। कार्यालय की व्यस्तता के बीच भी हिन्दी गृह पत्रिका "झलक" के 14 वें अंक का प्रकाशन करने का निर्णय लिया है और यह 14वें अंक प्रकाशित करते हुए मुझे अति प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। मैं विश्वास करता हूँ कि राजभाषा हिन्दी के प्रचार और प्रसार में हिन्दी पत्रिकाओं के लिए अहम भूमिका है। इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं इसके संपादक मंडल को बधाई देता हूँ क्योंकि उनके अथक परिश्रम से ही इसका प्रकाशन संभव हो पाया है। साथ ही उन सभी रचनाकारों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका में शामिल करने के लिए रचनाएं प्रदान की है।

ह/-

डॉ कलै सेलवन ए
निदेशक

वेल्लयंबलम
30.09.2025

अधिकारियों के लिए आयोजित राजभाषा जागरूकता कक्षा

तारीख 23,24.09.2025 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला

संपादकीय

हमारे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "झलक" के 14 वें अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। हमारे कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में कई सार्थक व महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। इस क्रम में कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "झलक" का प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया है। पत्रिका के इस अंक में सी-डैक परिवार के लोगों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न रचनाओं को शामिल किया गया है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में पत्रिका का अहम भूमिका है। इस पत्रिका के प्रकाशन को साकार करने के लिए रचना देने वाले केन्द्र के अधिकारियों और कर्मचारियों को मैं धन्यवाद देता हूँ। प्रिय पाठकों से अनुरोध है कि इस पत्रिका से संबंधित आपके बहुमूल्य सुझाव दें, ताकि अगला अंक आपके विचारों के अनुसार प्रकाशित कर सके।

जय हिन्द। जय हिन्दी।

ह/-

जगदीश कुमार आर एस
सह निदेशक एवं विभाग प्रधान(मानव संसाधन)

तिरुवनंतपुरम
30.09.2025

जन-गण-मन

जन-गण-मन अदिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता !
पंजाब-सिन्धु-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंङ्गा
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छल जलधि तरंग
तब शुभ नामे जागे,
तब शुभ आशिष माँगे
गाहे तब जय गाथा ।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता !
जय हे ! जय हे ! जय हे !
जय जय जय जय हे !

जन गण मन, भारत का राष्ट्रगान है जो मूलतः बंगाली में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा लिखा गया था। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने वर्ष 1911 में जन गण मन का रचना की थी मूल गाना बंगाली में लिखा गया था और पूरे गाने में 5 छंद है यह पहली बार 1905 में तत्वबोधिनी पत्रिका के एक अंक में प्रकाशित हुआ था। इसे 24 जनवरी 1950 को 'राष्ट्रगान' का दर्जा दिया गया।

जलवायु अनुकूल कृषि के लिए विकसित सुस्पष्ट खेती परिस्थिति प्रणाली

अनीष सत्यन
वैज्ञानिक 'ई'

बढते तापमान,वर्षा के स्वरूप में परिवर्तन,मिट्टी की उर्वरता में कमी,जलवायु अस्थिरता,कीट और फसली रोग जैसे जलवायु परिवर्तन कृषि पर गहरा प्रभाव डालती है । बढते तापमान जैसी जलवायु परिवर्तन कृषि के लिए कई गंभीर चुनौतियां पैदा की जाती हैं। पॉलीहाउस छोटे किसानों के लिए एक ऐसा उत्पादन परिदृश्य पैदा की जाती है जहां पौधों को नियंत्रित और आंशिक रूप से नियंत्रित वातावरण में खेती की जाती है। यह किसानों के लिए जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूल क्षमता को बढाने की प्रभावी साधन बन जाती है। आजकल विश्व भर में अपनाई जा रही नवीनतम अभ्यास प्रिसिशन फार्मिंग है। इसमें पौधों का सही परिस्थितियों में खेती की जाती है,जिसमें पौधे कभी भी अधिकाधिक पोषण से पीडित नहीं होते,अधिक सिंचाई या पोषण की कमी से प्रभावित नहीं होते,इसी प्रकार गुणता बढ जाती है,अधिकतम वृद्धि और उच्च उत्पादन सुनिश्चित की जाती है। सुस्पष्ट खेती जलवायु परिवर्तन से नहीं हो सकती है लेकिन यह विकासशील देशों में कृषि के लिए अनुकूल क्षमता बढाने में अत्यंत उपयुक्त बन जाती है।

प्रस्तावित ए आई/एम एल आधारित प्रणाली अधिक जलवायु परिस्थितियों के कारण फसल की वृद्धि और उपज को सीमित करनेवाले देशों में पारंपरिक कृषि मॉडल को सुधारने में सहायक सिद्ध हो सकता है। इस प्रस्तावित पारिस्थितिक मॉडल फसल वृद्धि आकलन,पौधों की बाहरी प्रक्रियाओं की समझ और उपज का पूर्वानुमान लगाने में सहायक होगी । पौधों के बाहरी स्वरूप का गैर-विनाशकारी आकलन बागवानी प्रयोगों में विश्वासयोग्य और सस्ती वैकल्पिकता प्रदान की जाती है।

यह प्रणाली विशेष रूप से भारत और अन्य विकासशील देश, जहां कृषि प्रमुख आय का स्रोत है और सतत देखभाल की आवश्यकता होती है, के लिए उपयुक्त है। इस प्रणाली का विस्तार अन्य कृषि आधारित उद्योग जैसे फूलों की खेती,बागवानी,मुर्गी पालन,डेरी उद्योग आदि में भी प्रयोग किया जा सकता है।

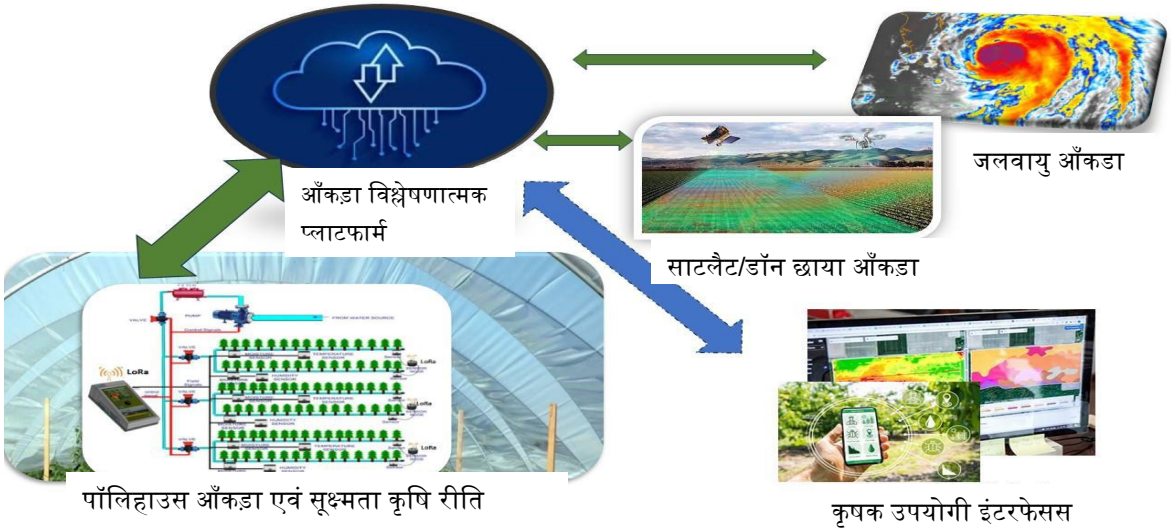

चित्र 1. जलवायु-सहनशील खेती की कार्यात्मक संरचना

यह फसल वृद्धि और पर्यावरणीय तत्व के बीच का प्रस्तावित परिमाणात्मक संबंध मॉडल और फसल जीवोत्पत्ति मॉडल स्थापित किया जा सकता है। इसमें आंतरिक पर्यावरण का पूर्वानुमान करने में बाहरी परिस्थितियों,मौसम संबंधी आंकड़े सैटसाइट/ड्रॉन चित्र और नियंत्रण के संचालन,ए आई/एम एल संचालन मॉडल का प्रयोग किया जाएगा। पॉलीहाउस वातावरण में सर्वोत्तम उपज पाने के लिए कई पैरामीटरों का मापना और नियंत्रित करना आवश्यक है।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र और जम्मु कश्मीर में जैविक सब्जियों के उत्पादन में वृद्धि जलवायु परिवर्तन की कमी अर्थात् पडोसी राज्यों से कम परिवहन,शीलीभूत ईधन का कम उपयोग,ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी और रासायनिक उर्वरकों का कम उपयोग के कारण है। साथ ही टिकाऊ जल और मिट्टी प्रबंधन का अनकूल वातावरण का असर से भी है।

धड़कन

विनोद एच
वरिष्ठ परियोजना अभियंता

हमने उसे ढूंढा नहीं,

पर नज़रे ढूंढ रही है।

हमने उसे पुकारा नहीं,

पर उसकी ध्वनि गूँज रही है।

हमने उसे पहचाना नहीं,

पर वो मेरी साथ थी।

हमने उसे जाना नहीं,

पर वो मेरी जान थी।

पर जब वो रुक जाती है,

फिर यो कहानी ही नहीं।

कार्यालय द्वारा तारीख 27.06.2025 और 30.06.2025 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला से

भारतीय संविधान की उद्देशिका

"हम, भारत के लोग, भारत को एक
संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न, समाजवादी, पंथ निरपेक्ष,
लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा
उसके समस्त नागरिकों को:
सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, श्रद्धा और
उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता,
प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में,
व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और
अखण्डता सुनिश्चित कराने वाली बन्धुता बढ़ाने
के लिए,
दृढ़ संकल्पित होकर अपनी संविधान सभा
में आज तारीख 26 जनवरी 1949 ई (मिति
मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत दो हज़ार छह
विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को
अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते है।"

भारत का संविधान,भारत का सर्वोच्च विधान है जो संविधान सभा द्वारा 26 नवम्बर 1949 को पारित हुआ तथा 26 जनवरी 1950 से प्रभावी हुआ। यह दिन (26 नवम्बर) भारत के संविधान दिवस के रूप में घोषित किया गया है। जबकि 26 जनवरी का दिन भारत में गणतन्त्र दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत के संविधान का मूल आधार भारत सरकार अधिनियम 1935 को माना जाता है। भारत का संविधान विश्व के किसी भी गणतान्त्रिक देश का सबसे लम्बा लिखित संविधान है। डॉ.भीमराव अम्बेडकर को भारतीय संविधान का जनक कहा जाता है।

मिसाईल वुमन – टेसी तोमस

हेमंत जीवन मगदूम
वैज्ञानिक 'ई'

हालाँकि दिखने में काकूबाई लगती है, लेकिन वे कोई आम आदमी नहीं है, न ही वे चुनाव के लिए खड़ी हुई हैं। अपार्टमेन्ट और अचानक कर्तुत्व वाली इस महिला का नाम है टेसी तोमस, एक ऐसा नाम जो आपने कभी नहीं सुना होगा। शायद आगे भी कुछ न सुना हो।

डॉ. अब्दुल कलाम को हम 'मिसाईलमान' कहते हैं। हमारे देश के हज़ारों वैज्ञानिक टेसी तोमस को 'मिसाइल वुमन' कहते हैं। टेसी तोमस भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के अंतर्गत डीफेन्स रिसर्च एंड डेवलपमेन्ट ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इंडियन स्पेस ऑर्गेनाइजेशन (इसरो) के नेतृत्व में काम कर रहे हैं। हमारे अपार बुद्धिमता के बल पर दो हजार वैज्ञानिकों के प्रमुख के रूप में उस देश के एक महान वैज्ञानिक, जिनके नेतृत्व में देश ने पिछले कुछ वर्षों में अग्नि मिसाइल का घेरा चार हजार किलोमीटर से पांच हजार किलोमीटर की दूरी तय किया है। टेसी तोमस के उस महान कर्तुत्व को सलाम।

केरल में एक मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुए टेसी का नाम मदर तेरेसा के आदर्श को माने जाने वाले उनके माता-पिता के कारण टेसी पड़ गया। बचपन से ही वह जिस मिसाइल का इस्तेमाल कर रही थी, उसे देखकर वह उस इलाके के बारे में गहरी समझ में आ गयी। पढ़ाई में निपुण होने के वजह से वह आई पी एस अधिकारी बनना चाहती थी। लेकिन वो मुड़ा अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के पास। उन्होंने पूणे में रहकर एम. टेक की डिग्री ली। डॉ. अब्दुल कलाम ने आग मिसाइल प्रोजेक्ट में प्रवेश किया था और अपनी अपार बुद्धिमता के बल पर वह बड़ी अग्नि मिसाइल 5 के प्रोजेक्ट डायरेक्टर बन गई। तब उन्होंने एक इतिहास रचा था। तब से उनकी पहचान 'अग्निपूत्री' के तौर पर हुई थी।

आज 49 साल की उम्र के टेसी तोमस एक आदर्श गृहिणी भी हैं। करियर और सार के लिहाज से भी रोजमर्रा की जिन्दगी में ही करना पड़ता है। 24 घंटे में किसी भी समय हजार काम पर रहने के बावजूद अपने हाथों से रसोई घर में बने स्वादिष्ट खाने घर के सदस्यों को देने में आनंद का अनुभव लेते हैं। देश को अधिक सुरक्षित बनाने के लिए लंबी दूरी की मिसाइलों को विकसित करने के नए विचारों को आगे बढ़ाते हुए हम विश्व शांति के लिए ऐसा कर रहे हैं। दुर्भाग्यवश उन्हें कभी हमारे देश के पद्मश्री, पद्मभूषण से सम्मानित नहीं किया है।

साथियों, टेसी तोमस की कहानी देश के करोड़ों महिलाओं को प्रेरणा देने वाली है।

भारत की मिसाईल वुमन - टेसी तोमस

ग्रामीण समाधान अनुसंधान

जेरी डानियल
वैज्ञानिक "जी"

ग्रामीण समाजों का सशक्तीकरण: समझदारी गॉवों के लिए स्थानीय डिजिटल पद्धतियाँ

ग्रामीण समुदायों को सृजनात्मक और आगे के चिंतन-रणनीतियों द्वारा ग्रामीण समाजों के उन्नयन के लिए सशक्तीकृत ग्रामीण पद्धतियाँ समर्पित है। यह विकसित स्वदेशी तकनीकी समाधान के प्रभावपूर्ण संभावना है जो स्थानीय संस्कृति पर आधारित और ग्रामीण समुदाय द्वारा सामना करने वाले विभिन्न चुनौतियों को सामना करने के लिए विकसित है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स(ए आई) आंकड़ा विश्लेशण समाधान नई संभावनाओं को खोलकर और बढ़ाकर नए अवसरें का प्रदान किए जाते हैं।

'ग्रामीण' एक सामान्य समझदारी गॉव अनुप्रयोग प्रणाली है, जो परस्पर जुड़े नेटवर्क सक्षम और धारणीय गॉव पारिस्थितिकी तंत्र बनाने में विभिन्न स्मार्ट तकनोलजियों और ऑप्लिकेशनों को परस्पर जोड़ती है। एक समझदारी गॉव परिस्थितिकी तन्त्र की सेवा के लिए एक एकीकृत ई-गॉव ऑप्लिकेशन प्लैटफार्म विकसित करने का सामान्य समझदारी गॉव ऑप्लिकेशन प्रणाली है। "स्मार्ट गॉव" का केन्द्र संघटक आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स (ए आई) प्लाटफार्म या समझदारी डिस्प्ले और डैशबोर्ड हैं। यह आंकड़ा के आधार पर निर्णय लेने की सुविधा उपलब्ध कराती है और विभिन्न गॉवों के प्रचालन कार्य की क्षमता बढ़ाती है। यह "इंटेल्लीविल्लेज ए आई हब" नामक केन्द्रीकृत ए आई प्लाटफार्म परिवर्तनकारी टूल

एक धारणीय और जुड़े हुए समुदाय को बढ़ावा देती है। एक स्मार्ट गॉव के लिए एक "इंटेलीविल्लेज ए आई हब" का सृजन करके इसमें विभिन्न प्रकार की विशेषताएं जोड़े और उसमें कृषि, उर्ज प्रबंधन, स्वास्थ्यचर्या, जल प्रबंधन जैसे विभिन्न विभागों की आवश्यकताओं की पूर्ती की जाती है।

स्मार्ट गॉव की संकल्पना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों के शासन और प्रबंधन में सुधार के लिए विकसित तकनोलजियों का प्रयोग करना है। स्मार्ट चीज़ों को एकीकृत करके, गॉव को स्थानीय प्रशासन की क्षमता और कार्य साधकता बढ़ाकर बेहतर संसाधन प्रबंधन, उन्नत सुरक्षा और रहनेवालों के जीवन के लिए उच्च गुणता प्रदान किया जाता है। स्मार्ट गॉव तकनोलजियों के कार्यान्वयन करके जल स्तर प्रबंधन, बेकार वस्तु का प्रबंधन, पर्यावरण नियंत्रण, जल विकास प्रबंधन, गॉव निगरानी और गली की बत्ती की निगरानी जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को संबोधित किए जाते हैं।

एक स्मार्ट गॉव तकनोलजी से स्थानीय शासन सुधारने, वितरण सेवा सुधारने और उच्च सामुदायिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करने में फायदा है। स्मार्ट गाँव सही समय आंकड़ा प्रदान करते हुए ग्रामीण शासन का परिवर्तित करने और सूचनाप्रद निर्णय लेने के लिए सहायक अंतदृष्टि प्रदान करने में महत्वपूर्ण है। यह पहल पारदर्शिता, जवाबदेही और नागरिक व्यवस्था को उन्नत करके शासन और जानकारी प्रद निर्णय लेने लायक अंतर्दृष्टि प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण है। यह पहल पारदर्शिता, जवाबदेही और नागरिक वचनबद्धता को बढावा देकर शासन प्रक्रिया को अधिक भागीदारी पूर्ण और समावेशी बना देते है। स्मार्ट समाधानों के अभिग्रहण से संसाधन उपयोगों के कम प्रयोग और पर्यावरण प्रभाव कम करके सतत विकास भी प्रदान करेंगे।

संज्ञानात्मक खेतीः भूतल से बढ़ती समृद्धि

पीढ़ियों से, छोटे कृषक अप्रत्याशित मौसम, सीमित बाज़ार पहुंच और अनुचित कीमत जैसे चुनौतियों का सामना करना पड़ रहे है। संज्ञानात्मक खेती ग्रामीण कृषि को सामाजिक सशक्तिकरण के चालक में बदल देती है। ए आई – संचालित सलाह प्रणाली कृषकों को बुवाई, सिंचाई और कीटों के प्रबंधन में सही समय पर मार्गदर्शन दिए जाते हैं। क्लौड अधारित प्लैट फॉर्म मोबाइल फोनों में मौसम और मिट्टी का अद्यतन जानकारी दी जाती है, जन ब्लॉकचेन की पता लगाने की क्षमता से कृषकों को माध्यम व्यक्तियों के बिना सही दाम मिलना सुनिश्चित किए जाते है। सटीक खेती पानी और उर्वरक का प्रयोग कम की जाती है और आई ओ टी सेंसर और स्वचालित सिंचाई प्रणालियों द्वारा उपज बढ़ाती है। इसका परिणाम, केवल उच्च फसल देना ही नहीं है, बल्कि ऊँचा आय, सतत अभ्यास और खेती करने वाले परिवारों को उच्च वित्तीय स्थिरता प्रदान करके- सशक्त ग्रामीण समुदायों की नीव डालना है।

इस नई पद्धति किसानों के आय बढ़ाती है और उच्च शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और डिजिटल अवसरों के पहुँच पाकर उनके परिवारों का उत्थान करके समृद्धि बाँटने वाला एक स्मार्ट गाँव के लिए बढ़ावा देती है।

संज्ञानात्मक खेती

भारत सरकार द्वारा उत्पादन, वहनीयता और किसानों का आय बढ़ाने के लिए कृषि में ए आई का प्रयोग प्रोत्साहित किए जाते है, कृषि में **राष्ट्रीय ई-शासन योजना (रा ई शा यो) और डिजिटल कृषि मिशन 2021-2025** मिट्टी स्वास्थ्य अनुवीक्षण, फसल उपज पूर्वानुमान, कीट और रोग का पता लगाना और मौसम-आधारित सलाहकार सहित विभिन्न उद्देश्यों के लिए ए अई सहित उपकरणों का प्रयोग किया जा रहा है। **रा कृ बा**(राष्ट्रीय कृषि बाज़ार) में बड़े आंकड़े के फायदा और पारदर्शी कीमत और सक्षम बाज़ार श्रृंखलाओं को सुनिश्चित करने की विश्लेषण विद्या जैसा मंच है। उस समय में, बडे पैमाने पर **भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् – राष्ट्रीय केला अनुसंधान केन्द्र** और विदर्भा में **क्लस्टर आधारित ए आई** कृषि जैसे पैलेट परियोजनाएं धारणीय कृषि के फायदाओं का उदाहरण हैं। सरकार द्वारा किसानों के संसाधनों को कम करने, जोखिम प्रबंध और लाभ बढ़ाने के लिए सही-समय, आंकड़ा आधारित निर्णय लेने की सहायता द्वारा कृषक सलाहकार प्रणाली सशक्तीकरण में समन्वित उपग्रह सृजित, आई ओ टी सेंसरें और मशीन सीख मॉडलों का प्रारंभ की है।

सामजस्य शिक्षाः डिजिटल अर्थ व्यवस्था के लिए ज्ञान निर्माण

सामजस्य शिक्षा और कौशल विकास सशक्तीकरण का आधार है, भारत सरकार के बौद्धिक गाँव योजना का भाग है, ग्रामीण युवकों और ग्रामीण क्षेत्रों के महिलाओं को सीखाने और रोज़गार के अवसरों को बढ़ाने के लिए विकसित डिजिटल प्रौद्योगिकियों का प्रयोग किए जाते है। बच्चों को स्मार्ट अध्ययन कक्ष और ए आई – द्वारा चलाया हुआ शिक्षा प्लाटफॉर्म वैयक्तिकृत शिक्षा द्वारा अपनी रीति में सीखने में मदद मिलती है। क्लौड-आधारित ई-लेर्निंग केन्द्र, गाँवों में रहनेवाले छात्रों को दुनिया भर के आध्यापकों और पाठ्यक्रमों के साथ जोड़ते हैं। ब्लॉक-चोन क्रेडेंशियल छोड़छाड़ सबूत और विश्व भर में सत्यापन योग्य डिजिटल प्रमाण पत्रों के प्राप्त करने में सहायक होती है। औपचारिक शिक्षा के अतिरिक्त, ग्रामीण युवकों और महिला उद्यमियों को डिजिटल कौशल का विकास और व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर डिजिटल अर्थव्यवस्था में सक्रिय रूप से लगे रहने में सशक्त करते हैं।

सामंजस्य शिक्षा डिजिटल विभाजन को कम करके, अध्ययन कक्ष को अवसरों, पद्धतियों को जीवनकाल की शिक्षा के प्रवेशद्वार की ओर रूपांतरित की जाती है। धारणीय और मापनीय मॉडलों से, बौद्धिक शिक्षा यह सुनिश्चित की जाती है कि शिक्षा से केवल सीखना नहीं बल्कि आजीविका, नई खोज और दीर्घकालिक ग्रामीण सशक्तीकृत रास्ते को बनाना है।

बौद्धिक अध्ययनकक्ष

भारत सरकार द्वारा शिक्षा का अंतराल समाप्त करने और सम्मिलित डिजिटल शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए स्मार्ट अध्ययन में ए आई और डेटा अनलैटिक्स् का प्रयोग की जाती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (रा शि नी) 2020 तकनीकी समर्थित निजीकृत शिक्षा, सामंजस्य मूल्यांकन और छात्रों के प्रगति की पता लगाने पर बल दिया जा रहा है। सरकार के दीक्षा (ज्ञान शेयरिंग के ले डिजिटल बुनियादी ढाँचे) और स्वयं जैसे पहल छात्रों के काम का पता लगाने के लिए, डिजिटल सामग्री वितरण प्रोत्साहित करने और शिक्षकों और नीति निर्माताओं को सही समय फीडबैक देने के लिए डेटा अनलैटिक्स का प्रयोग किए जाते है। सरकार ने ग्रामीण छात्रों, महिलाओं और विकलांग विद्यार्थियों के लिए समतुल्य पहुँच सुनिश्चित करने के लिए कुशल विकास, भाषा अनुवाद और बेहतर पहुँच को ध्यान में रखकर ए आई समर्थित शिक्षा प्लैटफार्मों का प्रयोग किया जा रहा है। ए आई चैटबोटें, बौद्धिक अनुशिक्षक प्रणालियाँ और पुर्वानुमानित अनलैटिक्स शिक्षा को एक स्मार्ट और सम्मिलित ढाँचे में परिवर्तित की जाती है। यह डिजिटल भारत के लिए एक बौद्धिक और कुशल कार्यबल को विकसित करने की कल्पना संरेखित की जाती है।

समझदारी स्वास्थ्य देखभालः स्वास्थ्य देखभाल द्वार पर

एक संपन्न समाज के लिए स्वास्थ्य अनिवार्य है, ग्रामीण भारत के लाखों लोग, डॉक्टरों और आस्पतालों की सीमित पहुँच के चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। समझदारी स्वास्थ्य देखभाल परिवर्त्तात्मक समाधान जैसे मोबाइल चिकित्सा यूनिटो(मो.चि.यू) द्वारा ग्रामीण समुदायों को गुणत्व पूर्ण स्वास्थ्य देखभाल देते है। इस आधुनिकतम मोबाइल चिकित्सा यूनिट, डिजिटल ई सी जी, अल्ट्रासौंड, मामोग्राम, टेलीमेडिसिन टूल्स और दवाओं का भंडारण जैसे सुविधा से युक्त है, गाँवों में रोग निर्णय और चिकित्सा सीधा दिए जाते है। आई ओ टी संचालित निगरानी, क्लौड-आधारित स्वास्थ्य रिकार्ड़ और टेलीमरामर्श समर्थित मोबाइल चिकित्सा यूनिटें कैंसर, डयबेटिक्स और हृदय की स्थितियाँ जैसे बीमारियों के शीघ्र पता लगाने में सहायक और समय पर और वहन करने योग्य चिकित्सा सुनिश्चित की जाती है। समझदारी स्वास्थ्य परिवारों को ओन-साइट दवा प्रदान करके नियमित अनुवर्तन निरीक्षण द्वारा प्रदान करने का लागत कम की जाती है। प्रसिशन स्वास्थ्य जीवन दरों में सुधार लाकर वहन करने योग्य, निवारक और धारणीय स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं द्वारा बीमारियों के बोझ को कम करके, ग्रामीण गाँवों के बीच के अंतर कम की जाती है और समझदारी ग्रामीण भारत की नींव को मज़बूत करने के सूपर स्पेशलिटी अस्पताल प्राप्त करने में मदद की जाती है।

समझदारी स्वास्थ्य

भारत सरकार द्वारा टेलीचिकित्सा और स्मार्ट ए आई में डिज़िशन सहायक प्रणाली जैसे डिजिटल स्वास्थ्य परिस्थितिकी तंत्र इलेक्ट्रॉनिकी स्वास्थ्य रिकार्डों के आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (आ भा डि मि) जैसे पहलों की शुरूआत की है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (रा स्वा मि) सार्वजनिक कार्यक्रम प्रादुर्भावों की पूर्व सूचना देने के लिए बीमारियों के स्वभावों का पहचान करने के लिए ए आई और डेटा अनलैटिक्स का प्रयोग करते है।

समझदारी गाँवों के लिए देशज डिजिटल नवीकरणों द्वारा धारणीय लक्ष्य

ग्रामीण विकास में ए आई और आंकड़ा आधारित डिजिटल नवीकरणों के एकीकरण से अनेक संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों (स वि ल) को सीधा सहायक हो जाती है। ए आई सक्षम मोबाइल चिकित्सा यूनिटें और टेलीमेडिसिन, बीमारियों के शीघ्र पता लगाने और वहन करने योग्य स्वास्थ्य देखभाल, उन्नत धारणीय विकास लक्ष्य 3 (अच्छी स्वास्थ्य और भलाई) प्राप्त करने में सहायक हो जाती है। उसी प्रकार, ए आई संचालित अनुकूली शिक्षा प्लाटफार्म निजीकृत शिक्षा प्रदान करके, ग्रामीण-नगरीय ज्ञान के अन्तर को कम की जाती है और धारणीय विकास लक्ष्य 4(गुणत्वपूर्ण शिक्षा) प्रदान की जाती है। महिला और बच्चों को ए आई सुरक्षित ऑपों से सशक्त करके, उद्मशील प्लाटफॉर्म और डिजिटल साक्षरता प्रगति धारणीय विकास लक्ष्य 5(लिंग समत्व) और धारणीय विकास लक्ष्य 10(कम किया हुआ असमत्व) संज्ञानात्मक कृषि समाधान उत्पादकता और वहनीयता बढ़ाती है, टिकाऊ विकास लक्ष्य 2(शून्य भूख) का समर्थन की जाती है और धारणीय विकास लक्ष्य 8 (शिष्ट काम और आर्थिक प्रगति)। ये

नवीकरण सरकारों उद्यमों और स्थानीय समुदायों के बढ़े सहयोग द्वारा धारणीय विकास लक्ष्य 9(उद्योग, नई खोज और आधारभूत संरचना) समर्थित है, धारणीय विकास लक्ष्य 11(नवीकरण शहरें और समुदाय) और धारणीय विकास लक्ष्य 17 (लक्ष्यों के लिए साझेदारी) सहायक होगी। ये पहले देशज डिजिटल नवीकरणें ग्रामीण समुदायों के अधिकारों का उत्थान की जाती है, सभी वैश्विक नवीकरण लक्ष्यों का समर्थन की जाती है।

एक धारणीय, समावेशी और भविष्य-तत्पर और समझदारी गाँवों के निर्माण से एक देशज डिजिटल नवीकरण द्वारा ग्रामीण समाजों को सशक्त किए जाते हैं। संज्ञनात्मक कृषि, अनुकूलक शिक्षा, समझदारी स्वास्थ्य देखभाल और सामूहिक सशक्तीकरण जैसे डोमेन में ए आई, कलौड कंप्यूटिंग, ब्लॉक चेन और आंकड़ा अवलैटिक्स् समाकलन से भारत को डिजिटल विभाजन में एक पुल बनाने और ग्रामीण समुदायों के लिए नए अवसरों को खुला कर देने में सहायक हो सकती है। ये तकनीकें केवल उत्पादन और सेवा वितरण बढ़ाते ही नहीं बल्कि किसानों, महिलाओं, बच्चों और गैर मामूली समूहों को भी डिजिटल अर्थ व्यवस्था में सक्रियता से शामिल होने के लिए सशक्त करते हैं। आधुनिकतम प्रौद्योगियाँ, देशज जानकारी और सरकारी पहलें लचीलें, आत्म-निर्भर और समाजिक रूप से सशक्त गाँवों को डिजिटल परिवर्तनकारी युग में पनपने में सक्षम हो जाने में प्रोत्साहित किए जाते हैं।

राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए विभाजित भारत के तीन क्षेत्र

क्षेत्र "क"	क्षेत्र "ख"	क्षेत्र "ग"	
उत्तर प्रदेश बिहार छत्तीसगढ हरियाणा हिमाचल प्रदेश झारखंड मध्य प्रदेश राजस्थान उत्तराखंड दिल्ली अंडमान व निकोबार द्वीप समूह	गुजरात महाराष्ट्र पंजाब चंडीगढ़ दमन व दीव दादरा व नगर हवेली	केरल तमिलनाडु नागालैंड आंध्रा प्रदेश तेलुंगाना कर्नाटक मिजोरम ओडिशा पश्चिम बंगाल असम अरुणाचल प्रदेश गोवा	मणिपुर सिक्किम लक्षद्वीप त्रिपुरा पुदुचेरी मेघालय जम्मु और काश्मीर लदाख

विचारण

पार्वती डी के
तकनीशियन

अकेला इस रास्ता मार्ग से
यात्रा करते ही
अपना ही न्यायाधीश के आगे
विचारण हो रहा है.....
अपराधी के पिंजरे में मन और वकील के रूप में
बुद्धि भी
दयारहित बुद्धि प्रश्नों के बाणों से
मन का खण्डन किया
बड़े आवाज़ के लहरें चट्टानों में
चूमकर ढूढते जैसे यादें
मनको चीरते हुए.....
जवाबें दबकर रोते हुए
प्रवाह बिना रुकते आँसुओं से
मिटाते हुए समाप्त होते हुए
पैरें ज़मीन पर रुकते मुझे ही
नगण्य सा इस दुनिया में
अन्य लोगों की ओर विचारण के लिए
न देने वाले मुझे मुझसे
कृतज्ञ ही.....
दंड और विचारण रूप देते
नए चिंतागति को
चेतनापूर्ण मन को
गुलाम होने से बहतर
दयारहित बुद्धि के
अधीन होना ही बहतर
सोचने की गति के लिए शक्ति बढ़ा है .....
अकेलापन शांति भी
यात्रा में वापस देखते ही
प्रिय सभी दूसरों को
अपना हो गया है.....
विचारण और पहचानने के लिए
अंत में केवल एक प्रश्न ही.....
किसके स्नेह उपहार था
यह अकेलापन.....?

कार्यस्थल में जेनरेशन ज़ेडः विद्रोही, यथार्थवादी और पुनर्परिभाषकें

सपना रवींद्रन
वैज्ञानिक 'ई'

आज किसी भी कार्यालय में जाएँ और आपको कुछ अनोखा नज़र आएगा। एक कोने में, जेनरेशन एक्स का एक मैनेजर ब्लैक कॉफ़ी की चुस्कियाँ लेते हुए सबको अंतिम सीमा याद दिला रहा है। दूसरे कोने में, एक मिलेनियल कई टैब, पॉड़कास्ट और प्रेजेंटेशन में व्यस्त है और फिर जेनरेशन जेड है – हेडफ़ोन लगाए, ज़ूम कॉल, कोडिंग और इंस्टाग्राम कहानियों के बीच एक साथ स्विच कर रहे हैं। नए कार्यस्थल में आपका स्वागत है।

पहले सच्चे डिजिटल मूल निवासी

जेनरेशन ज़ेड के लिए, गूगल हमेशा से मौजूद रहा है और क्लाउड हमेशा मौसम के बारे में नहीं था। वे वर्तनी सीखने और पूरे वाक्य बोलने से पहले स्वाइप करना और टेक्सटिंग करना सीख गए थे। यह उन्हें बिजली की गति से सीखने वाला बनाता है, लेकिन धीमी प्रक्रियाओं के प्रति अधीर भी। उनके लिए, ईमेल के जवाब का इंतज़ार करना डाक से पत्र का इंतज़ार करना जैसा है।

मक़सद वेतन से ज़्यादा

अपने माता-पिता के विपरीत, जेनरेशन ज़ेड को कोने वाले कार्यालयों या सुहरे नेमप्लेट से कोई आकर्षण नहीं है। वे और भी कठिन सवाल पूछते हैः क्या यह काम मायने रखता है ? क्या यह मेरे मूल्यों के अनुरूप है ? क्या यह मुझे आगे बढ़ने में मदद करेगा ? अगर जवाब ना है, तो वे चाहे कितनी भी बड़ी तनख्वाह क्यों न हो, नौकरी छोड़ने से नहीं हिचकिचाएँगे। यह उन्हें कुछ लोगों की नज़र में विद्रोही बनाता है, लेकिन कुछ की नज़र में यथार्थवादी।

पुराने नियमों को चुनौती देना

नौ से पाँच बजे की नौकरी को भूल जाइए। जेनरेशन ज़ेड हाइब्रिड शेड्यूल, साइड हसल्स और आज़ादी में फलता-फूलता है। उनका मानना है कि रचनात्मकता समय की परवाह नहीं करती। साथ ही, वे मानसिक स्वास्थ्य के बारे में बेहद ईमानदार हैं, और वही माँग करते हैं जो पुरानी पीढियाँ अक्सर चुपचाप सहती थी। जहाँ बेबी बूमर्स "अपना सिर झुकाकर काम करते

रहने" में विश्वास करते थे, वहीं जेनरेशन ज़ेड "या तो खुलकर बोलने या फिर चले जाने" में विश्वास करता है।

टकराव या ताज़गी ?

स्वाभाविक रूप से, इससे चीज़ें बदल जाती हैं। प्रबंधक "वफ़ादारी की कमी" या "कम ध्यान अवधि" की शिकायत करते हैं। लेकिन हो सकता है कि वफ़ादारी गायब न हो रही हो – हो सकता है कि इसे नए सिरे से परिभाषित किया जा रहा हो। जेनरेशन ज़ेड वफ़ादारी देगा, लेकिन तभी जब उसे विकास, सम्मान और निष्पक्षता दिखाई दे। उनका ध्यान कम नहीं है; यह चयनात्मक हे। वे इसे निर्थक नौकरशाही पर बर्बाद नहीं करेंगे।

जेन ज़ेड के साथ कैसे काम करें, उनके खिलाफ नहीं

सीधी बात करें। वै विज्ञापनों और फर्जी खबरों को छानते हुए बड़े हुए हैं। वे प्रामाणिकता को महत्व देते हैं। लचीलापन प्रदान करें। कठोर नियम उन्हें लक्ष्य दें, टाइमकार्ड नहीं। विकास में निवेश करें। ऑनलाइन पाठ्यक्रम, मार्गदर्शन, करियर के रास्ते – वे सीखने के लिए लालायित रहते हैं। भलाई को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। जेन ज़ेड अत्यधिक काम को प्रतिबद्धता के बराबर नहीं मानता वे संतुलन को ही असली सफलता मानते हैं। बर्नआउट जेन ज़ेड के लिए सम्मान का प्रतीक नहीं है। उन्हें साझेदार बनाएँ। वे केवल नौकरी नहीं चाहते वे भविष्य का सह-निर्माण करना चाहता है।

पीढ़ियों का पुनर्निर्माण

विडंबना यह हैः हर पीढ़ी कभी विद्रोही सेना जैसी दिखती थी। बूमर्स "हिप्पी" थे, जेन एक्स "आलसी" थे, और मिलेनियल "हकदार" थे। अब जेनरेशन ज़ेड की बारी है लेबल ले जाने की। लेकिन गौर से देखिए, तो आपको कुछ दमदार नज़र आएगा। वे अब तक के सबसे विवध, समावेशी और सामाजिक रूप से जागरूक कार्यबल हैं। वे हमें निराश कर सकते हैं, लेकिन वे हमें ऐसे कार्यस्थल बनाने के लिए भी मजबूर करेंगे जो ज़्यादा मानवीय, नवोन्मेषी और भविष्य के लिए तैयार हों।

जेनरेशन ज़ेड कार्यस्थल पर नहीं आ रहा है – वे पहले से ही यहाँ हैं। असली सवाल यह हैः क्या हम उनकी बात सुनने के लिए तैयार हैं, या हम उन नियमों से चिपके रहेंगे जो अब काम नहीं करते ?

****

क्वांटम आधारित अनुकूली यातायात अनुकूलन नियंत्रण प्रणाली (क्वांटम – एटीसीएस)

हेमंत जीवन मगदूम
वैज्ञानिक 'ई'

शहरों में बुद्धिमान परिवहन प्रणालियों के प्रसार ने भारी कम्प्यूटेशनल भार पैदा किया है, जिसके लिए बड़े पैमाने पर यातायात के प्रबंधन के लिए एक नवीन वास्तुकला की आवश्यतकता होती है। यह एक निश्चित समय यातायात नियंत्रण प्रणाली के विपरीत है, जिसमें संकेत समय पूर्व निर्धारित होता है और नहीं बदलता है। क्वांटम कंप्टूटिंग एक नई तकनीक है जो अभी भी विकास के अधीन है, लेकिन इसमें उन समस्याओं को हल करने की क्षमता है जो शास्त्रीय कंप्यूटरों के साथ अप्रभावी हैं। क्वांटम कंप्यूटिंग का एक संभावित अनुप्रयोग एटीसीएस में है।

एक क्वांटम एटीसीएस में दिए गए यातायात नेटवर्क के लिए इष्टतम यातायात संकेत समय खोजने की समस्या को हल करने की एक क्वांटम कंप्यूटर का उपयोग होती है। इस समस्या को एनपी-हार्ड के रूप में जाना जाता है, जिसका अर्थ है कि एक शास्त्रीय कंप्टूटर के साथ हल करना बहुत मुश्किल है। हालांकि, एक क्वांटम कंप्यूटर संभावित रूप से इस समस्या को बहुत जल्दी हल कर सकती है।

क्वांटम एटीसीएस प्रणालियों को विकसित करने के लिए कई अनुसंधान परियोजनाएं चल रही हैं। ऐसी ही एक परियोजना हैम्बर्ग, जर्मनी में मोज़ार्ट परियोजना है। मोज़ार्ट परियोजना क्वांटम से प्रेरित एटीसीएस प्रणाली विकसित कर रही है जो क्वांटम एनालर का अनुकरण करने के लिए क्लासिकल कंप्यूटर का उपयोग करती है। क्वांटम एननियलर का उपयोग सिमुलेटेड नेटवर्क के लिए इष्टतम यातायात संकेत समय को खोजने के लिए किया जाता है।

एक अन्य अनुसंधान परियोजना कानडा के वाटरलू विश्वविद्यालय में क्वांटम ट्रैफिक सिग्नल अनुकूलन परियोजना है। यह परियोजना एक क्वांटम एटीसीएस प्रणाली विकसित कर रही है जो वास्तविक क्वांटम एननियलर का उपयोग करती है। क्वांटम एननियलर का उपयोग वास्तविक यातायात नेटवर्क के लिए इष्टतम यातायात संकेत समय को खोजने के लिए किया जाता है।

क्वांटम एटीसी प्रणालियां अभी भी विकास के शुरुआती चरणों में हैं, लेकिन उनमें यातायात प्रबंधन में क्रांति लाने की क्षमता है। क्वांटम कंप्यूटिंग का उपयोग करके, ये प्रणालियां यातायात की समस्या को हल कर सकती हैं और यातायात के प्रवाह में सुधार कर सकती हैं।

एटीसीएस के लिए क्वांटम कंप्यूटिंग का उपयोग करने के कुछ लाभ इस प्रकार हैः

- क्वांटम कंप्यूटर उन समस्याओं को हल कर सकते हैं जो क्लासिकल कंप्यूपटों के साथ अप्रभावी हैं।
- क्वांटम कंप्यूटर इष्टतम ट्रैफिक सिग्नल टाइमिंग को क्लासिकल कंप्यूटरों की तुलना में बहुत जल्दी पा सकते हैं।
- क्वांटम एटीसीएस प्रणालियां बदलती यातायात स्थितियों के लिए अधिक लचीली और अनुकूलनीय हो सकती हैं।
- क्वांटम एटीसीएस प्रणालियां ऊर्जा खपत के संदर्भ में अधिक कुशल हो सकती हैं।

हालांकि, कुछ चुनौतियां भी हैं जिन्हें क्वांटम एटीसी प्रणालियों को व्यापक रूप से लागू करने से पहले दूर करने की आवश्यकता है। इन चुनौतियों में शामिल हैः

- क्वांटम कंप्यूटरों पर यातायात अनुकूलन समस्यों को हल करने के लिए कुशल एल्गोरिदम का विकास।
- मौजूदा यातायात प्रबंध अवसंरचना के साथ क्वांटम एटीसीएस प्रणालियों का एकीकरण।

इन चुनौतियों के बावजूद, क्वांटम एटीसीएस प्रणालियों में यातायात प्रबंधन में क्रांति लाने और यातायात के प्रवाह में सुधार लाने की क्षमता है।

संविधान की अष्ठम अनुसूची में शामिल भाषाएं

1 मराठी	12 संताली
2 कोंकणी	13 मैथिली
3 कन्नड़	14 नेपाली
4 मलयालम	15 कशमीरी
5 तमिल	16 डोग्री
6 तेलुगु	17 हिंदी
7 ओड़िया	18 संस्कृत
8 बंगला	19 उर्दू
9 असमिया	20 पंजाबी
10 मणिपुरी	21 सिन्धी
11 बोडो	22 गुजराती

सर्वश्रेष्ठ निष्पादन पुरस्कार-2025 प्राप्त अधिकारीगण/कर्मचारीगण

श्रेणी-I (वैज्ञानिक डी एवं वैज्ञानिक ई (नियमित एवं जी बी सी),अनुबंद्ध वैज्ञानिक(लवल 12 के बराबर), अनुबंद्ध वैज्ञानिक(सी ए ई-1 एवं 2),परियोजना प्रबंधक और अन्य समतुल्य ठेके पर नियुक्त कर्मचारी)।

क्रम सं.	कर्मचारी प सं.	नाम	पदनाम	ग्रूप
1.	135640	श्री एबी एस ए	वैज्ञानिक ई	आई टी एन जी
2.	135923	श्री अरुण राज कुमार के पी	वैज्ञानिक ई	पी ई जी
3.	135752	श्री दीपक आर यु	वैज्ञानिक ई	एच टी जी
4.	342579	श्री शरतकुमार एस	वैज्ञानिक डी	ई टी जी
5.	346023	श्री श्रीजु जी आर	परियोजना प्रबंधक	एच डी जी

श्रेणी-II (वैज्ञानिक बी एवं वैज्ञानिक सी (नियमित एवं जी बी सी),अनुबंद्ध वैज्ञानिक(लवल 11 के बराबर), ज्ञान असोसियेट/एस पी ई/पी ई/परियोजना असोसियेटऔर अन्य समतुल्य ठेके पर नियुक्त कर्मचारी)।

क्रम सं.	कर्मचारी प सं.	नाम	पदनाम	ग्रूप
6.	172216	श्री अभिलाष बालन	परियोजना इंजीनियर	आई टी एन
7.	345949	श्री अनंतु पी अशोककुमार	परियोजना इंजीनियर	ए ई जी
8.	345892	श्रीमती अनश्वरा नंबियार	परियोजना इंजीनियर	सी एस एस
9.	345942	श्रीमती अन्नपूर्णा एस एम	परियोजना इंजीनियर	एस ई जी
10.	345966	श्री अनु नारायणन आर	परियोजना इंजीनियर	एस ई जी
11.	345919	श्री अरुण के	परियोजना इंजीनियर	ई टी जी
12.	346069	श्री बिजोई एम एस	परियोजना असोसियेट	ई टी जी
13.	3459455	श्री दीपु एस एस	परियोजना इंजीनियर	एच टी जी
14.	346072	श्रीमती जिजी स्टीफन	परियोजना असोसियेट	एस ई जी
15.	345948	श्री नितिन प्रकाश	परियोजना इंजीनियर	एस ई जी
16.	345981	श्री रंजित पी एम	परियोजना इंजीनियर	ई टी जी
17.	345969	श्रीमती रोशनी शशिधरन	परियोजना जीनियर	एस ई जी
क्रम	कर्मचारी प सं.	नाम	पदनाम	ग्रूप
18.	345940	श्रीमती रूपिका राज	परियोजना इंजीनियर	एच टी जी
19.	346058	श्री सुजीष एस	परियोजना असोसियेट	ई टी जी
20.	345720	श्री विष्णु वी दास	परियोजना इंजीनियर	सी आई जी
21.	346207	श्री वैष्णव पी के	परियोजना इंजीनियर	ई टी जी

श्रेणी-III(तकनीकी अधिकारीगण एवं वरिष्ठ तकनीकी अधिकारीगण और तकनीकी कार्य में लगे अन्य समतुल्य ठेके पर नियुक्त कर्मचारी)।

क्रम सं.	कर्मचारी प सं.	नाम	पदनाम	ग्रूप
22.	116226	श्री जयन जी	तकनीकी अधिकारी	क्यू ए एस
23.	116372	श्रीमती सीना एस राजन	तकनीकी अधिकारी	पी ई जी

श्रेणी-IV(अधिकारी(लवल 9 एवं 10), वरि. अधिकारी,परियोजना अधिकारी,वरि.परियोजना अधिकीरी और अन्य समतुल्य ठेके पर नियुक्त कर्मचारी)।

क्रम सं.	कर्मचारी प सं.	नाम	पदनाम	ग्रूप
24.	344795	श्री शरत शशी	खरीद अधिकारी	पी एच एस

श्रेणी-V(वेतन मेट्रिक्स लवल-7 तक के सभी तकनीकी कर्मचारीगण ,परियोजना सहायक,परियोजना तकनीशियन और तकनीकी कार्य में लगे अन्य समतुल्य ठेके पर नियुक्त कर्मचारी)।

क्रम सं.	कर्मचारी प सं.	नाम	पदनाम	ग्रूप
25.	149350	श्री अरुण सत्यन एस के	परियोजना सहायक	एस टी डी सी
26.	116340	श्रीमती बीना वी	तकनीकी सहायक	एच डी जी
27.	148299	श्री चार्ल्स् जे	परियोजना तकनीशियन	एम एस एस
28.	345023	श्रीमती दिव्या ए जी	परियोजना सहायक	एस ई जी
29.	116452	श्री नागराजन एम	तकनीकी सहायक	पी एवं एस
30.	181953	श्री रागेष ई एम	परियोजना तकनीशियन	ई टी जी
31.	182242	श्री राहुल दास एच एस	परियोजना तकनीशियन	सी एफ एस
32.	116350	श्री राजेष एस एस	तकनीकी सहायक	पी एवं एस
33.	345809	श्री रामचंद्रन सी	तकनीकी सहायक	पी ई जी
34.	346249	श्री श्रीकांत एस के	एम एस एस-III	पी ई जी
35.	341481	श्री विष्णु श्याम	परियोजना तकनीशियन	पी ई जी

श्रेणी-VI(वेतन मेट्रिक्स लवल-7 तक के सभी प्रशासनिक कर्मचारीगण,परियोजना सेवा सहायक कर्मचारीगण और प्रशासनिक कार्य में लगे अन्य समतुल्य ठेके पर नियुक्त प्रशासनिक कर्मचारीगण)।

क्रम सं.	कर्मचारी प सं.	नाम	पदनाम	ग्रूप
36.	345750	श्रीमती जास्मिन आर	कनिष्ठ सहायक	एच आर एस
37.	148095	श्री जयपालन के	परियोजना सहायक कर्मचारी	वित्त
38.	148109	श्रीमती राजी वी नायर	परियोजना सहायक कर्मचारी	वित्त
39.	148110	श्रीमती रेखा जा एस	परियोजना सहायक कर्मचारी	पी एच एस
40.	345822	श्री समयमांतुला एन एस वी भोगेश्वरा गुप्ता	लिपिक	वित्त

प्रत्येक महीने के विशेष दिनों के बारे में जानिए:-

जनवरी		अप्रैल		21	राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस
09	प्रवासी भारतीय दिवस	07	विश्व स्वास्थ्य दिवस	29	राष्ट्रीय खेलकूद दिवस
10	विश्व हिन्दी दिवस	12	विश्व वन दिवस	सितंबर	
12	राष्ट्रीय युवा दिवस	13	विश्व जल दिवस	05	राष्ट्रीय अध्यापक दिवस
15	थल सेना दिवस	15	विश्व मैसम विज्ञान दिवस	08	विश्व साक्षरता दिवस
24	राष्ट्रीय बालिका दिवस	18	विश्व क्षय रोग दिवस	14	हिन्दी दिवसीयविश्व प्रथमोपचार दिवस
25	राष्ट्रीय पर्यटन दिवस	22	विश्व नाटक दिवस	15	अतर्राष्ट्रीय अभियंता दिवस
26	गणतंत्र दिवस/ अतर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस	मई		16	विश्व ओज़ोन दिवस
30	शहीद दिवस/विश्व कुष्ठ रोग उन्मूलन दिवस	11	राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस	21	विश्व शांति दिवस
फरवरी		15	अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस	27	विश्व पर्यटन दिवस
02	विश्व दलदल दिवस	जून		अक्तूबर	
04	विश्व कैंसर दिवस	05	विश्व पर्यावरण दिवस	02	गाँधी जयंती
13	विश्व रेडियो दिवस/ राष्ट्रीय महिला दिवस	14	विश्व रक्तदान दिवस	03	विश्व प्रकृति दिवस
14	वैलेंटाइन दिवस	16	अंतर्राष्ट्रीय एकता दिवस	04	विश्व पशु दिवस
21	अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस	20	विश्व शरणार्थी दिवस	05	विश्व अध्यापक दिन
23	विश्व शांति एवं समझौता दिवस	21	विश्व संगीत दिवस	06	विश्व वन्य जीव दिवस
24	केंद्रीय उत्पाद शुल्क दिवस	जुलाई		08	भारतीय वायु सेना दिवस
28	राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	11	विश्व जनसंख्या दिवस	09	विश्व डाक दिवस
मार्च		26	कारगिल विजय दिवस	10	राष्ट्रीय डाक-घर दिवस
03	विश्व वन्यजीव दिवस/राष्ट्रीय रक्षा दिवस	28	विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस	11	अंतर्राष्ट्रीय बालिका दिवस
04	राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस	29	अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस	16	विश्व खाद्य दिवस
08	अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस/अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस	अगस्त		31	विश्व बचत दिवस
15	विश्व विकलांग दिवस/विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस	06	हिरोशिमा दिवस	नवंबर	
21	विश्व वन दिवस	08	विश्व वरिष्ठ नागरिक दिवस	11	राष्ट्रीय शिक्षा दिवस
22	विश्व जल दिवस	09	भारत छोड़ो दिवस	14	शिशु दिन/विश्व मधुमेह दिवस
23	विश्व मौसम विज्ञान दिवस	12	अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस	19	अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस/राष्ट्रीय एकता दिवस
24	विश्व क्षय रोग दिवस	15	स्वतंत्रता दिवस	21	सर्वदेशीय बाल दिवस
27	विश्व नाटक दिवस	20	राष्ट्रीय सद्भावना दिवस	30	राष्ट्रीय झंडा दिवस

दिसंबर	
02	राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस
04	भारतीय नौ-सेना दिवस
05	विश्व मृदा दिवस
07	अंतर्राष्ट्रीय नागर विमानन दिवस
09	अंतर्राष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी दिवस
10	विश्व मानवाधिकार दिवस
14	राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस
18	अंतर्राष्ट्रीय प्रवासी दिवस
20	अंतर्राष्ट्रीय मानव एकता दिवस
23	किसान दिवस
24	राष्ट्रीय उपभोक्ता अधिकार दिवस

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत अनिवार्य रूप से द्विभाषी में जारी की जानेवाली कागज़ातों की सूची

1. **संकल्प**
2. **सामान्य आदेश**
3. **नियम**
4. **अधिसूचनाएं**
5. **प्रशासनिक व अन्य रिपोर्ट**
6. **प्रेस विज्ञप्तियां**
7. **प्रेस टिप्पणियां**
8. **संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जानेवाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्ट**
9. **संविदा**
10. **करार**
11. **अनुज्ञप्तियां**
12. **अनुज्ञापत्र**
13. **निविदा सूचनाएं**
14. **निविदा प्रारूप**

राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन के लिए लक्ष्य निर्धारित करते हुए जारी वर्ष 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1	हिन्दी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	क क्षेत्र से क क्षेत्र को-100% क क्षेत्र से ख क्षेत्र को-100% क क्षेत्र से ग क्षेत्र को-70%	ख क्षेत्र से क क्षेत्र को-90% ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को-90% ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को-60%	ग क्षेत्र से क क्षेत्र को-60% ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को-60% ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को-60%
2	हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में दिया जाना	100%	100%	100%
3	हिन्दी में टिप्पण	80%	55%	35%
4	हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5	हिन्दी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
6	हिन्दी में डिक्टेशन/ की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
7	हिन्दी प्रशिक्षण(भाषा,टंकण,आशुलिपि)	100%	100%	100%
8	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9	पुस्तकालय के कुल अनुदान में से हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10	हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद।	100%	100%	100%
11	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं	100%	100%	100%
13	मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30%(न्यूनतम)	30%(न्यूनतम)	30%(न्यूनतम)
14	राजभाषा संबंधी बैठकें (क)नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ख)राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक), वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिन्दी अनुवाद	100%	100%	100%
16	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/ बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिन्दी में हों।	45%	35%	25%

कार्यालय के राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए किए जा रहे कार्य

राजभाषा कार्यान्वयन समिति के दिनांक 28.07.2025 को आयोजित बैठक

भारत सरकार के अनुसार कार्यालय द्वारा हर तिमाही में बिना चूक निदेशक की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्यन समिति की बैठकों का आयोजन किए जाते हैं और बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन के प्रगामी प्रयोग के विभिन्न मुद्दे जैसी राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अधीन के कागज़ात अनिवार्य रूप से द्विभाषी में जारी करना सुनिश्चित करना, हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर अनिवार्य रुप से हिन्दी में दिया जाना, हिन्दी पत्राचार की प्रतिशतता बढ़ाना, हिन्दी कार्यशाला का आयोजन करना, अनुभागों का निरीक्षण करना, हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन करना आदि विषयों पर चर्चा करके निर्णय लेते है।

कार्यालय के अधिकारियों (लवल 10 और उससे ऊपर) के लिए दिनांक 19.09.2025 को आयोजित जागरूकता कक्षा

सी-डैक, तिरुवनंतपुरम में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में गति लाने और कर्मचारियों के राजभाषा हिन्दी में कार्यालयीन कार्य करने में प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से कार्यालय के लवल 10 और उससे ऊपर के अधिकारियों के लिए राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किए जाते है । वर्ष 2025 के राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम के सिलसिले में दिनांक 19.09.2025 को आयोजित राजभाषा जागरूकता कक्षा में संविधान में हिदी, राजभाषा अधिनियम 1976, वार्षिक कार्यक्रम 2025-26 और तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर कक्षा लिया गया।

सी-डैक, तिरुवनंतपुरम द्वारा दिनांक 23.09.2025 और 24.09.2025 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला से।

कार्यालय द्वारा अधिकारियों और कर्मचारियो के लिए हर तीन महीने में एक हिन्दी कार्यशाला आयोजित किए जाते है। कार्यशाला में अधिकारियों और कर्मचारियों के हिन्दी में कार्य करने के झिझक को दूर करने के साथ-साथ कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने का अभ्यास भी करवाते है। कार्यशाला में भारत सरकार के राजभाषा नीति, टिप्पण एवं आलेखन, पत्र लेखन, कार्यालयीन शब्दावली, कार्यालयीन प्रयोग में आनेवाले लघु टिप्पणियाँ जैसे विषयों पर कक्षा लिए जाते है।

हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2025

हिन्दी पखवाड़ा समारोह 2025

संसदीय राजभाषा समिति के दूसरी उप समिति द्वारा तारीख 09.01.2025 को सी डैक, तिरुवनंतपुरम में किए राजभाषा निरीक्षण से

स्वतंत्रता दिवस समारोह
2025

प्रगत संगणन विकास केंद्र(सी-डैक)

(इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत
का एक स्वायत्त वैज्ञानिक संस्था)

वेल्लयंबलम, तिरुवनंतपुरम-695033